: **अध्याय पहला** :

उपेन्द्रनाथ अश्क के ' अलग-अलग रास्ते ' नाटकान्तर्गत समस्याएँ

अध्याय पहला

उपेन्द्रनाथ अश्क के ` अलग-अलग रास्ते ` नाटकान्तर्गत समस्याएँ

अ) उपेन्द्रनाथ अश्क - चरित्रगत एवं साहित्यिक परिचय:

चरित्रगत परिचय:

श्री.उपेन्द्रनाथ अश्क का जन्म पंजाब प्रान्त के जालन्धर नामक नगरमें १४ दिसम्बर १९१० को एक मध्यवित्त के ब्राह्मण परिवार में हुआ। अश्क छ: भाईयोमें दूसरे है। उनके पिता पंडित माधोराम स्टेशन मास्टर थे। उनके पिता बादमें रिलीविंग में आ गये और फिर कोयटा चले गये। इसी कारण इन छ: बच्चों के साथ उनकी माँ जालन्धर आई, जहाँ वे अँग्लो संस्कृत हाईस्कूल की प्राइमरी क्लासमें सीधे तीसरी कक्षा में दाखिल करा दिये गये। तीसरी कक्षा में इसीलिए कि माँ ने उन्हें घरपर काफी पढा रखा था। वहीं से १९२७ में उन्होंने मैट्रिक किया। और वहीं डी.ए.वी.कालिजसे उन्होंने १९३१ में बी.ए.की डिग्रीं ली। बी.ए.की परीक्षा देते ही अश्क के सामने जीविकोपार्जन की समस्या खडी हुई। अश्क के पिता अजीब मनमौजी और रंगीले आदमी थे। वे शराब तो पीते ही थे, बल्कि जुआ भी खेलते थे। कई बार सारी का सारा वेतन हार देते थे। फल स्वरूप अश्कजीका परिवार बडी कठिनाई में से दिन गुजारता था।

अश्कजी का मन एम.ए. करने को था, पर एम.ए. के लिए लाहौर जाना जरूरी था, और इतनी पूँजी न थी, इसलिए परीक्षा देते ही वे अपने स्कूलमें अध्यापक हो गये। अश्कजी बचपनमें अध्यापक बनने, लेखक और सम्पादक बनने और थिएटर अथवा फिल्ममें जाने के सपने अक्सर देखा करते थे। अध्यापक बनते ही उनका पहला सपना पूरा हो गया। लेकिन प्राइव्हेट स्कूल की अध्यापकी जीवन की संकीर्णता से ऊब कर अश्कजी लाहौर गये और वहाँ

उर्दू दैनिक ' भीष्म ' में पच्चीस रूपये पर काम करने लगे । कुछ महीने काम करने के बाद वे लाला लजपतराय व्दारा संचालित उर्दू दैनिक ' वंदेमातरम् ' में चले गये । उसी वर्ष उनकी शादी हो गयी ।

१९३३ मे अश्कजी ने वह नौकरी भी छोड दी । और कुछ महीने स्वतन्त्र रूपसे जीविकोपार्जन करते रहे । इस बीचमें उन्होंने साप्ताहिक ' भूचाल ' का सम्पादन भी किया और साप्ताहिक ' गुरू घंटाल ' के लिए प्रति सप्ताह एक रूपये में एक कहानी लिखकर देना शुरू किया । इसी बीचमें आपने ' झंडू फार्मेसी ' के लिए विज्ञापन लिखे और ' मस्ताना जोगी ' के लिए जडी बूटियोंपर लेख लिखे ।

लेकिन १९३४ में आपने अचानक ला-कॉलिज ज्वाईन कर लिया । १९३६ में फर्स्ट डिवीजनमें पास हुए । सात सौ छात्रोंमे ऊपर के आठ दस छात्रोंमें उनका नम्बर था । जिस साल अश्कजी ने लॉ किया, उस वर्ष ग्यारह छात्र चुने जानेवाले थे । इसलिए यदि वे कॉम्पीटीशन में बैठते तो उनके सफल होने का काफी चांस था, पर कॉम्पीटीशन के दो महीने पहले ११ दिसम्बर,१९३६ को लम्बी बीमारी के बाद अश्कजी की पहली पत्नी की मृत्यु हो गई और वे जज न बन सके । अश्कजी ने कानून की किताबें बेच-बाच डाली और स्वतन्त्र रूपसे साहित्य-सेवा करने लगे ।

१९३६ के बाद अश्कजी के साहित्य का अति-उर्वरयुग आरंभ होता है । इससे पहले भी वे लिखते थे । उर्दूमें ' नवरत्न ' और ' औरत की फितरत ' नामक उनके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके थे और हिन्दी कहानी संग्रह ' जुदाई की शाम का गीत ' की अधिकांश कहानियाँ भी उर्दू में छपी थीं । लेकिन ये कृतियाँ आदर्शोन्मुख, कल्पनाप्रधान अथवा कोरी रोमानी था । अनुभूति का स्पर्श उन्हें कम मिला था । १९३६ के बाद अश्कजी की कृतियोंमे जीवन के व्यक्तिगत अनुभव से निखार आ गया है । और इसी समय वे साहित्य-सृजन के सिवा और कुछ न करते थे ।

अश्कजी की पहली पत्नी यक्ष्मा से पीडित थी। परंतु उन दिनों उस रोगी को बचाने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता थी, उनका उनके पास नितान्त अभाव था। इसी समय जीवन की यथार्थता के कुछ ऐसे अनुभव अश्कजी को हुए, कि उन्होंने सब-जजी और वकालत का विचार छोडकर मन को लगाने के लिए उन्होंने कलम उठाई, तो उनकी लेखनी अबाध गतिसे बह निकली।

" उर्दू काव्य की एक नयी धारा " (आलोचनात्मक ग्रंथ), " जय-पराजय " (ऐतिहासिक नाटक), " पापी ", वेश्या ", " अधिकार का रक्षक ", लक्ष्मी का स्वागत, " " जोंक ", " पहेली ", और " आपस का समझौता " (एकांकी), " स्वर्ग की झलक ", (सामाजिक नाटक) उनके कहानी संग्रह, " पिंजरा " की सभी कहानियाँ, " छींटे " की कुछ कहानियाँ और " प्रात:दीप " की सभी कविताएँ उनकी पत्नी की मृत्यू के दो अढाई साल बाद ही के अल्प समय में लिखी गई। इन रचनाओं मे अपनी अनुभुतियोंको व्यक्त किया और इसी कारण वे अगली पंक्ति के लेखकों में आ गये।

१९३९ में अश्कजी " प्रीतनगर " चले गये और वहाँसे निकलनेवाली एक मासिक पत्रिका के उर्दू-हिन्दी दोनों संस्करणोंका सम्पादन करने लगे। प्रीतनगरमें अश्कजी पौने दो साल रहे। यहाँ उन्होंने अपनी तीन चार कहानियाँ, " छठा-बेटा " नाटक और " गिरती दीवारें " का बहुत कुछ अंश लिखा।

पहली पत्नी की मृत्यु के बाद अश्कजी की अभिलाषा शादी करने की नहीं थी, परंतु अचानक १९४१ मे उन्होंने कुछ महीने अन्तर से दो शादियाँ कर डाली। अश्कजी का घरेलू जीवन सुखमय नहीं था। दूसरी पत्नी से अश्कजी की नहीं बनी। अपने ही कथनानुसार एक ही महीने के उस दिखावटी जीवन के नरक से वे ऊब उठे और प्रीतनगर की नौकरी पर लात मार, फर्निचर आदि बेच, पत्नी को मैके भेजकर, उन्होंने दूर बंगलोर में एक टयूशन ले ली।

लेकिन बंगलोर के लिए चलनेसे चन्द दिन पहिले ही कथाकार कृष्णचंद्र ने उन्हे ऑल इंडिया रेडिओ में बुला लिया और जून,१९४१ में वे वहाँ परामर्शदाता के रूप में काम करने लगे। १२ सितम्बर १९५१ में कृष्णचन्द्र सोनरिक्सा दम्पति और महारथी परिवार की उपस्थिती में अश्कजी और कौशल्या वैवाहिक रिश्ते में बंध गये।

१९४५ के जून में अश्कजी रेडिओ के अधिकारियोंसे झगडा होने केकारण नौकरीसे त्याग-पत्र देकर " फौजी-अखबार " के हिन्दी एडीशन के सम्पादक बनकर चले गये। लेकिन वह काम उन्हें पसंद नहीं आया। उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया।

फिल्मी दुनियामें अश्कजी दो वर्ष रहे। दो सालमें ही उन्होंने पन्द्रह हजार रूपया जमा किया। उन्होंने इस दो वर्ष के अर्सेमें नितिन बोस की फिल्म " मजदूर " और बी.मित्रा की फिल्म " सफर " के डायलॉग लिखे और अपने दोनों फिल्मोंका संवाद-निर्देशन स्वयं किया। श्री.विरेंद्र देसाई तथा नलिनी जयवन्त के लिए एक कहानी और उसके गाने लिखे और नीतिन बोस की फिल्म " मजदूर " और अशोककुमार के फिल्म " आठ दिन " में अभिनय भी किया।

अश्क फिल्म में काम करने के साथ साहित्यिक काम भी करते रहे थे। बम्बई के प्रवास में उन्होंने अपना प्रसिध्द एकांकी " तूफान से पहले " लिखा। कहानी " कैप्टन रशीद " लिखी, " कैद " और " उडान " के अन्तिम दर्शन तैयार किये और " गिरती दीवारें " का उर्दू अनुवाद किया। फिल्म में अनथक काम करने के बाद यह सब लिखने पढनेसे उनका स्वास्थ्य गिर गया। बम्बई का वातावरण उन्हें पसन्द न आया। उन्होंने लाहौर जाने की सोची : परंतु वे बीमार पड गये और डाक्टरोंने दो महीनोंके बाद यक्ष्मा का फतवा दे दिया। अश्कजी को उसी समय लाहौर के बदले पंचगनी के सेनेटोरियम में कौशल्या जी ले गई।

१९४७-४८ का काल, जहाँ एक ओर अश्क जी की घोर अस्वस्थता का काल है, वहाँ उनके सृजन की उर्वरता का भी स्वर्ण-समय है। बीमारी के पहले छे महीने में अश्क जी को पूरा आराम करने और निरन्तर बिस्तर पर लेटे रहने का आदेश था। वे लेटे लेटे कविता करते रहे। अपनी प्रसिध्द कविता ' दीप जलेगा ' और अपना खण्डकाव्य ' बरगद की बेटी ' उन्होंने इसी समय लिखा। जब उनको उठने बैठने और काम करने की इजाजत मिली तो उन्होंने फिर कहानी लिखना आरंभ कर दिया। ' छीटें ' की लगभग २० कहानियाँ इसी समयमें लिखी गई। इसके अतिरिक्त अश्कजीने अपना नाटक ' कहसा साब कहसी आया ' यहीं लिखा। ' चरवाहे ' छपवाया और ' आदिमार्ग ' के नाटकों की प्रेस कापी तैयार की।.

बीमारी के पौने दो वर्षोंमें अश्कजी ने फिल्म में जो चौदह पन्द्रह हजार रूपया कमाया था खत्म हो गया। सामान का काफी हिस्सा लाहोर रह गया था। उस समय अश्कजी बड़े चिन्तित थे। लेकिन स्व.होमवती देवी के चिरंतन श्रमसे उन्हें यू.पी.सरकार से पाँच हजार रूपयेका स्टाइपेंड मिला और अश्कजी के लिखनेपर शिक्षा मन्त्री ने अढाई हजार रूपया पंचगनी पहुंचा दिया। अश्कजी काफी स्वस्थ हो गये थे। जून १९४८ में डॉक्टरोंने अश्कजी को पंचगनी छोड़ने की इजाजत दी और जुलाई १९४८ में वे दिल्लीसे होते हुए इलाहबाद आ गये। दो महिने बाद कौशल्या जी वहाँ सामान लेकर पहुंची।

१९४८ से १९५३ तक अश्क दम्पत्ति के जीवनमें बड़े संघर्ष वर्ष रहे हैं। अश्क बीमारी के कारण नौकरी के योग्य नहीं रहे। दायाँ फेफड़ा बन्द होने से श्रम का काम करना उनके लिए कठिन था, फिर हर छटे महीने उन्हें इंजेक्शन लेने पड़ते। तब कौशल्याजीने पहले यू.पी. और फिर केन्द्रिय सरकार से ऋण लेकर ' नीलाभ प्रकाशन गृह ' की नींव रखी और अश्कजी की पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था की। अपना प्रकाशन गृह होने से अश्कजी

को लिखने की थी बड़ी प्रेरणा मिली। उनके नये प्रहसनों का एक संग्रह 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' उनकी और कौशल्या जी की सम्मिलित कहानियों का संग्रह 'दो धारा' और अश्कजी की कहानियों का संग्रह 'काले साहब' फिल्मी जीवनपर हास्य व्यंग्य प्रधान नाटक पैंतरे और बृहद उपन्यास 'गर्म राख और मार्मिक खण्डकाव्य 'चाँदनी रात और अजगर' प्रकाशित हुये हैं। इन नयी कृतियों के अतिरिक्त अश्कजी ने अपनी अधिकांश पुस्तकोंका संशोधन और परिवर्धन किया है। 'आदि मार्ग' और 'अंजो दीदी' को दुबारा लिखा और उन्हें पूरे नाटक बना दिया है। 'गिरती दीवारे' में कई परिच्छेद बढ़ा दिये और उसकी भाषा का परिमार्जन किया।

<७रा> साहित्यिक परिचय:

वैसे तो हम अश्कजी का चरित्रगत परिचय देते समय थोड़ा बहुत उनके साहित्य के बारे में जान गये ही हैं, फिर भी उन्होंने इतना साहित्य लिखा है - जैसे कहानी, उपन्यास, निबन्ध, लेख, संस्मरण, आलोचना, नाटक, एकांकी, कविता - कि सभी का परिचय कर देना आवश्यक ही है।

नाटक के क्षेत्र में १९३७ से लेकर इन्होंने जितनी कृतियाँ सम्पूर्ण नाटक और एकांकी के रूप में लिखी हैं, सब प्राय: अपने लेखनकाल के उपरान्त उसी वर्ष क्रम से प्रकाशित हुई है।

नाटक:-

- 'जय-पराजय' (१९३७)
- 'स्वर्ग की झलक' (१९३८)
- 'छठा बेटा' (१९४०)
- 'कैद' (१९४३-४५)
- 'उड़ान' (१९४३-४५)
- 'पैंतरे' (१९५२)
- 'अलग-अलग रास्ते' (१९४४-५३)
- 'आदर्श और यथार्थ (१९५४)
- 'अंजोदीदी' (१९५३-५४)

एकांकी :-

- "पापी" (१९३८)
- "वेश्या" (१९३८)
- "लक्ष्मी का स्वागत" (१९३८)
- "अधिकार का रक्षक" (१९३८)
- "जोंक (१९३९)
- "आपस का समझौता (१९३९)
- "पहेली" (१९३९)
- "विवाह के दिन" (१९४०)
- "देवताओंकी छायामें" (१९४०)
- "खिड़की" (१९४१)
- "सूखी डाली" (१९४१)
- "चमत्कार" (१९४१)
- "नया पुराना" (१९४१)
- "बहने" (१९४२)
- "कामदा" (१९४२)
- "मैमूना" (१९४२)
- "चिलम" (१९४२)
- "चरवाहे" (१९४२)
- "चुम्बक" (१९४२)
- "तौलिये" (१९४३)
- "भँवर" (१९४३)
- "आदिमार्ग" (१९४३)
- "पक्का गाना" (१९४४)
- "तूफान से पहले" (१९४६)
- "कइसा साब कइसी आया" (१९४६)
- "अन्धी गली के आठ एकांकी" (१९४९)
- "पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ" (१९५०)
- "बतसिया" (१९५०)
- "कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्घाटन (१९५०)
- "मस्केबाजों का स्वर्ग" (१९५१)
- "साहब को जुकाम है" (१९५४-६० के एकांकी)

उपन्यास :-

- "सितारों के खेल" (१९३७)
- "गिरती दीवारें" (१९४७)
- "गर्म राख" (१९५२)
- "बड़ी-बड़ी आँखें" (१९५४), तथा
- "पत्थर-अल-पत्थर" (१९५७)

कहानियाँ:-

१९३२ से १९३६ के रचनाकाल में " अंकुर", " नासूर", " चट्टान", " डाची", " पिंजरा", " गोखरू", " बैंगन का पौधा", " मेमने", " दालिये", " कालेसाहब", " बच्चे", " उबाल", कैप्टन रशीद", आदि अश्ककी प्रतिनिधी कहानियों के नमूने सहित कुल डेढ-दो सौ कहानियों मे अश्क का कहानीकार का व्यक्तित्व सफलता से व्यक्त हुआ है।

काव्यग्रन्थ :-

" दीप जलेगा" (१९५०), " चांदनी रात और अजगर (१९५२), " बरगद की बेटी" (१९४९)।

संस्मरण:-

मरो मेरा दुश्मन" (१९५६)

निबन्ध लेख पत्र, डायरी और विचार ग्रन्थ:-

" ज्यादा अपनी कम परायी" (१९५०), " रेखाएँ और चित्र" (१९५८)।

अनुवाद:

" रंगसाज (१९५८), रूस के प्रसिध्द कहानीकार" ऐंटन चेखव" के लघु उपन्यास का अनुवाद, " ये आदमी ये चूहे" (१९५०). " स्टीन बैक के प्रसिध्द उपन्यास" आव माइस एण्ड मैन का अनुवाद, " हिज एक्सेलेन्सी" (१९५९), अमर कथाकार, " दास्तवस्की" के लघु उपन्यास, " डर्टीस्टोरी" का हिन्दी अनुवाद।

संपादन:-

" प्रतिनिधी एकांकी (१९५०), " रंग एकांकी" (१९५६), " संकेत" (१९५६)।

सृजन की इतनी क्षमता से सहज ही अश्ककी लेखन-शक्ति और भाव जगत की समृध्दता का अंदाजा लगाया जा सकता है । उपन्यास, नाटक, कहानी और काव्य क्षेत्रमें अश्क की उपलब्धि विशेष रूप से महत्वपूर्ण है । ' गिरती दीवारें ' और ' गर्म राख ' हिन्दी उपन्यास क्षेत्रमें यथार्थवादी परम्परा के उपन्यास है ।

सम्पूर्ण नाटकों में ' छठा बेटा ', ' अंजो दीदी ' और ' कैद ' अश्क की नाटयकला के उदाहरण है । ' छठा बोटा ' के शिल्प मे हास्य और व्यंग, ' अजोदीदी ' के स्थापत्य में व्यावहारिक रंगमंच के सफलतम तत्व और शिल्प का अनूठापन तथा ' कैद ' में स्त्री का -हृदयस्पर्शी चरित्र-चित्रण तथा उसके रचना विधान में आधुनिक नाटयतत्व की जो अभिव्यक्ति हुई है, उससे अश्क की नाटयकला और रंगमंच के परिचय का संकेत मिलता है । एकांकी नाटकों में ' भँवर ',' चखाहे ',' चिल्मन ', ' तौलिए ' और ' सूखी डाली ', अश्क की एकांकी कला के सुन्दरतम उदाहरण है । सभी एकांकी रंगमंचके स्वायत्त अधिकारी है ।

अश्क की कहानियाँ प्रेमचंन्द के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद अथवा विकास क्रमसे प्राप्त विशुध्द यथार्थवादी परम्परा की है । कहानी - कला और रचना शिल्प स्पष्ट कथातत्व के सहित मूलत: चरित्र के केन्द्र बिन्दु से होता है ।

अश्क के समस्त चरित्र उपन्यास, नाटक अथवा कहानी किसी भी साहित्य प्रकारमें जो आये है, वे सर्वथा यथार्थ हैं । उनसे सामाजिक और वैयक्तिक जीवन की समस्त समस्याओं रागव्देष का प्रतिनिधित्व होता है ।

-000-